बाबा मुक्तानन्द द्वारा दी गईं सिखावनियाँ

बाबा मुक्तानन्द की महासमाधि २०१८, के सम्मान में उनकी एक सिखावनी

सिखावनी # ५ :

मैं ध्यान बड़ी उत्सुकता, निष्ठा और प्रीति से करता था, किसी भय के वश होकर नहीं। किसी को प्रसन्न करने के लिए या किसी से कुछ लाभ प्राप्त करने के लिए अथवा किसी कामना या वासना या विषयवृत्ति की पूर्ति के लिए ध्यान नहीं करता था। मैं कोई शारीरिक या मानसिक रोग दूर करने के लिए भी ध्यान नहीं करता था, कोई चमत्कारिक सिद्धियाँ पाकर नाम-ख्याति प्राप्त करना भी नहीं चाहता था। ध्यान करने के लिए किसी का आग्रह भी नहीं था। मैं इसलिए भी ध्यान नहीं करता था कि धर्म कहता है — 'ध्यान करना अच्छा है।' मैं तो केवल भगवत्प्रेम के लिए, भगवती चितिशक्ति के आकर्षण से मोहित होकर, स्वस्वरूप के अनुसन्धान के लिए ध्यान करता था।[१]

~ बाबा मुक्तानन्द

---

[१]स्वामी मुक्तानन्द, *चित्शक्ति विलास,* [चित्शक्ति पब्लिकेशन्स्, २०१२] पृ. १४०।

© २०१८ एस.वाय.डी.ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।